पवित्रा अग्रवाल

ई-मेल:agarwalpavitra78@gmail.com

अच्छा आइडिया

मजदूरों के साथ पति को आते देखकर पत्नी ने पूछा, "तुमने मजदूर क्यों बुलाए हैं?"

"अपनी इतनी बड़ी छत है। उसमें तीन परनाले हैं । छत का ढलान ठीक करवाना है ताकि बरसात का पानी नालियों में बहकर बेकार न हो जाए ।"

"तुम्हारी क्या योजना है?"

"अपनी बोरिंग के पास एक बड़ा गड्ढा है, जिसे तुम भरवाकर सीमेन्ट प्लास्टर कराने को कह रही थीं। उसमें पानी जल्दी ही नीचे उतर जाता है ।"

"तो ?"

"मानसून आने वाला है। छत का ढलान ठीक कराके उस पानी को गड्ढे में जाने की व्यवस्था करा देता हूँ। बोरिंग भी रिचार्ज होती रहेगी और जमीन में जाकर पानी, पानी का लेवल कम नहीं होने देगा।"

"गुड, यह अच्छा आइडिया है।"

सहृदयता

कहने को एक सूटकेस व्हील वाला और हैंडबैग ही उनके पास था; पर, अचानक एक व्हील निकलकर दूर जा गिरा और उनके लिए अटैची खींचना मुश्किल हो रहा था। वह असहाय-सी चारों तरफ देख रही थी; पर, कोई कुली वहाँ नहीं था। एक कुली किसी का सामान लिए वहाँ से गुजरा तो माँ-सी दिखने वाली उस बुजुर्ग महिला के पास रुककर उनकी ट्रेन के बारे में पूछा और बोला, "माँजी, आपकी ट्रेन अगले प्लेटफार्म पर आएगी लेकिन वह आधा घंटा लेट है। मैं एक पेसिन्जर का सामान दस मिनट में गाड़ी में रखकर आता हूँ, मेरा बिल्ला नंबर 55 है। मैं आपको गाड़ी में बैठाकर आऊँगा, आप यहीं मिलिएगा।"

कहकर वह तो चला गया पर वह दुविधा में थी कि पता नहीं आएगा या नहीं, अभी तो उसने भाड़ा भी तय नहीं किया।

उसकी नजरें दूसरे कुली को तलाशती रहीं पर कोई नहीं मिला, एक मिला भी तो सीधे दो सौ माँगे। उसने कहा "एक सूटकेस के दो सौ? कुछ तो सोच समझ कर बोलो" पर वो आगे बढ़ गया।

इंतजार करते 15 मिनट बीत गए; पर, उस कुली का कहीं अता पता नहीं था। अब कोई दूसरा कुली मिले तो वह दो सौ रुपए भी देने को तैयार हो जाती, तभी वह दौड़ता हुआ आया और बोला, "चलो माँजी, एस्केलेटर से चलते हैं। आपको सीढ़ी भी नहीं चढ़नी पड़ेगी।"

"ना बेटा, इससे मुझे डर लगता है।"

"मैं हूँ न।" सुनकर उसे विदेश में रहने वाले बेटे-बेटी का स्मरण हो आया।

ट्रेन आ चुकी थी। उन्हें ट्रेन में बैठाकर वह मुड़ा ही था कि उन्होंने उसका हाथ पकड़कर रोक लिया, "धन्यवाद बेटा, महनताना तो लेते जाओ।"

"नहीं माँजी," ट्रेन चलने को हुई तो उन्होंने दो सौ का एक नोट उसके हाथ में रखते हुए कहा, "गाड़ी चल दी है, जल्दी उतरो।"

वह दौड़कर गाड़ी से उतर गया, उसकी सहृदयता से उनका मन भीग-सा गया था।